ISSN 2350-1065 MUKTANCHAL
वर्ष : 09, अंक : 34, अप्रैल-जून 2022

शोध, समीक्षण, सृजन एवं संचार का

शोध, समीक्षण, सृजन एवं संचार का

मुक्तांचल

पीयर रिव्यूड त्रैमासिक

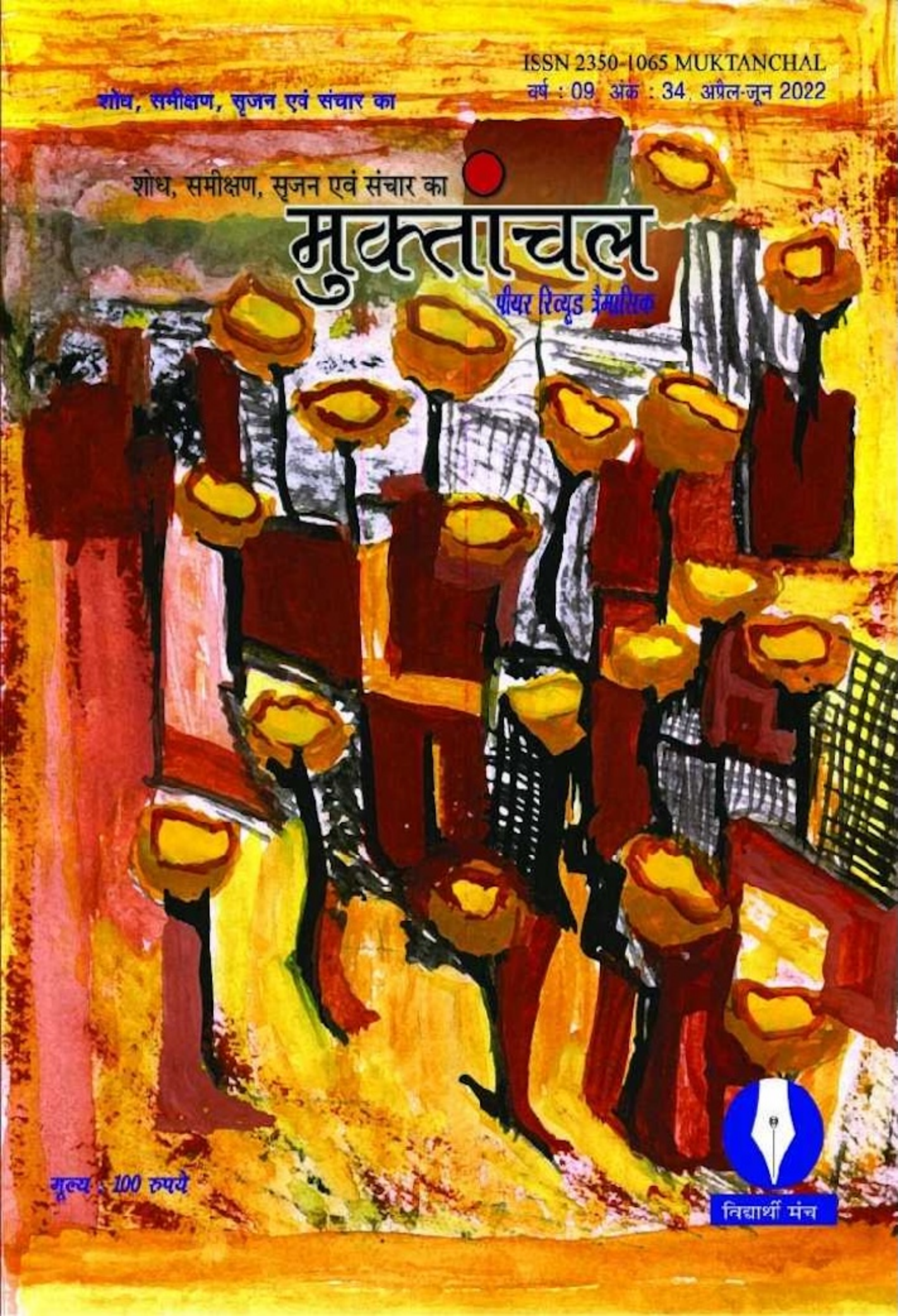

मूल्य : 100 रुपये

विद्यार्थी मंच

उस पार से ...

गोरख पाण्डेय

(जन्म 1945 - 29 जनवरी 1989)

बीसवीं सदी

यह सदी
बीसवीं सदी
यह खून और अंगारों की
यह समझौतों की और कपट व्यापारों की
यह कठिन स्वार्थ के जटिल तर्क जालों से बिल्कुल लदी
बीसवीं सदी।

यह मेहनतकशों गुलामों की
यह अब तक के गुमनामों की
यह प्रबल मुक्ति संघर्षों की
यह जीवन के उत्कर्षों की
यह समय गर्भ से फूटी आजादी की अविरल नदी
बीसवीं सदी।

गोरख पाण्डेय विशेषांक
रचनाकाल - 1987

ISSN 2350-1065 MUKTANCHAL

शोध, समीक्षण, सृजन एवं संचार का

मुक्तांचल

पीयर रिव्यूड त्रैमासिक

वर्ष-9, अंक- 34, अप्रैल-जून 2022

संपादक : **डॉ. मीरा सिन्हा**

प्रकाशक : **विद्यार्थी मंच**

प्रबंध संपादक : **सुशील कुमार पांडेय**

कला संपादक : **शुभागता श्रीवास्तव**

प्रसार प्रबंधक : **रमेश कुमार शर्मा**

आकल्पक : **लखनपति झा**

प्रूफ संशोधक : **परमजीत पंडित**

परामर्श एवं विशेष सहयोग :

प्रो. दामोदर मिश्र : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, विद्यासागर विश्वविद्यालय

डॉ. कृष्ण कुमार : अध्यक्ष, गीतांजलि बहुभाषिक साहित्यिक समुदाय, (बर्मिंघम, यू.के.)

डॉ. पंकज साहा : खड़गपुर कॉलेज, पश्चिम बंगाल

डॉ. अरुण कुमार : प्राक्तन प्रोफेसर, राँची विश्वविद्यालय

डॉ. रणजीत सिन्हा : मिदनापुर कॉलेज (ऑटोनोमस), मिदनापुर

डॉ. निशांत : काजी नजरूल विश्वविद्यालय, आसनसोल

डॉ. रामप्रवेश रजक : हिंदी विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय

व्यवस्थापन एवं प्रबंधन :

विनोद यादव, विनीता लाल, पार्वती शॉ एवं बलराम साव (98318-89154)

संपर्क एवं प्रसार :

चाँदनी सिन्हा (बर्मिंघम, यू.के.) : +447411412229

कुणाल किशोर (के.वि. हिमाचल प्रदेश): 7998837003

लेखकों से अनुरोध किया जाता है कि मुक्तांचल में प्रकाशन हेतु सामग्री यूनिकोड वर्ड (Unicode Word) या (Kurtidev010) में भेजें।

पत्रिका में व्यक्त विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं 'मुक्तांचल' से संबंधित सारे विवादों के लिए न्याय-क्षेत्र कलकत्ता उच्च न्यायालय होगा।

पीयर रिव्यूड टीम :

डॉ. धूपनाथ प्रसाद : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

डॉ. विश्वजीत भद्र : प्राध्यापक, नेताजी नगर कॉलेज (कलकत्ता विश्वविद्यालय)

प्रो. मोहम्मद फ़रियाद : प्राक्तन अध्यक्ष, जनसंचार विभाग, मौलाना आजाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद

डॉ. सुनील कुमार 'सुमन': प्रभारी, क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

प्रो. मंजु रानी सिंह : विश्वभारती, शांतिनिकेतन

प्रो. अरुण होता : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, स्टेट यूनिवर्सिटी, बारासात

प्रो. मनीषा झा : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, उत्तर-बंग विश्वविद्यालय

डॉ. सत्या उपाध्याय : प्राचार्य, कलकत्ता गर्ल्स कॉलेज, कोलकाता

डॉ. अंजनी कुमार झा : एसोसिएट प्रोफेसर, मीडिया स्टडीज, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतीहारी (बिहार)

डॉ. शुभ्रा उपाध्याय : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, खुदीराम बोस सेंट्रल कॉलेज, कोलकाता

मुक्तांचल: A/c- 50200014076551, HDFC BANK BURRABAZAR, KOLKATA- 700007, IFSC CODE- HDFC0000219

संपादकीय कार्यालय :

आधुनिक अपार्टमेंट, 6/2/1 आशुतोष मुखर्जी लेन सलकिया, हावड़ा-711106, पश्चिम बंगाल

संपर्क - 033-26751686, 9831497320, 9681105070

ई-मेल - muktanchalpatrika@gmail.com sinhameera48@gmail.com

मुद्रक : शिक्षण, 50, सीताराम घोष स्ट्रीट, कोलकाता-700009

पत्रिका का मूल्य : एक अंक - 100 रुपये

सदस्यता शुल्क : वार्षिक- 500 रुपये, आजीवन-2500 रुपये

संस्थाओं के लिए : वार्षिक-550 रुपये, आजीवन-3000रु.

डाकखर्च (प्रत्येक अंक के लिए) अतिरिक्त 30 रुपये।

अवस्थिति

शोध समीक्षण सृजन संचार

6 संस्तुति

आलेख

8	**सुभाषचन्द्र गुप्त**	बॉब डिलनः प्रतिरोध की संस्कृति का गायक
16	**पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु'**	अशोक वाजपेयी
25	**शशिभूषण द्विवेदी**	लीलाधर जगूड़ी : अकविता के तांडव से सभ्यता के पेंचों तक भाया मनुष्य-मन
35	**माधव नागदा**	युवा मन को संस्कारित करने में सक्षम हैं लघुकथाएँ (संदर्भ पाठ्यक्रम में लघुकथाएँ)
40	**रणजीत कुमार सिन्हा**	शिवदान सिंह चौहान और हिंदी आलोचना

विमर्श

46	**श्रीनारायण पाण्डेय**	प्रेमचन्द की लेखकीय प्रतिबद्धता

संस्मृति

53	**कौशल किशोर**	रामनिहाल गुंजनः रचना विवेक के अप्रतिम उदाहरण

शोधार्थी की कलम से

59	**नगीना लाल दास**	प्रेमचंद पूर्व उपन्यासों का स्वरूप एवं महत्व

यात्रा-वृतांत

65	**विनोद साव**	होसपेट, हम्पी और तुंगभद्रा

कहानी

72	**प्रवीण कुमार सिंह**	आत्मा की शांति
80	**संजय कुमार सिंह**	पुनर्जीवन

समय की शिला पर

86	**निशांत**	जो छपा, वही मेरा है

कविता

89	**मनीषा झा**	मनीषा झा की दो कविताएँ
90	**शिवदयाल**	शिवदयाल की तीन कविताएँ
91	**लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव**	लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव की दो कविताएँ
92	**राजकुमार जैन**	राजकुमार जैन 'राजन' की पाँच कविताएँ

शोध

समीक्षण

सृजन

संचार

सरगम के सुर साधे

94 **मदन कश्यप** कविता ही प्रतिपक्ष है

पुस्तकायन

98 **संजय देसाई** भिन्न परिवेश के सचाइयों की दास्तान : अंतिम साक्ष्य

103 **प्रियंका शाह** मधुपुर आबाद रहे

भाषांतर

105 **डॉ. अमूल्य रत्न महांति** देश (मूल ओड़िआ : डॉ. ममतामयी चौधुरी)

संचार

107 **अशोक कुमार मीणा** न्यू मीडिया : अवसर और चुनौतियाँ

111 **तेजस पूनिया** क्षेत्रीय सिनेमा की उलझनों को सुलझाती 'ग्रुप-डी सीजन 2'

साक्षात्कार

113 **प्रदीप कुमार** कविता समाज को बदलने का एक औजार है : जितेन्द्र श्रीवास्तव

120 **गतिविधियाँ** विश्व के सर्वश्रेष्ठ कथाकार है संजीव : नरेश सक्सेना।

कविता पर केंद्रित कार्यक्रम 'एक साँझ कविता की - 8' संपन्न।

संस्तुति

प्रस्तुत अंक में कविता पर विशेष रूप से चर्चा हुई है। जरुरत है कविता पर जमकर बहस चलाने की और उसके लिए 'मुक्तांचल' एक जुझारु मंच हो सकता है, जहाँ पर कविता-संवाद की गति ले सके। कविता साहित्य की आदिम विधा है। अविरल तथा अजस्र स्रोतस्विनी, भावोच्छलन की असीम क्षमता से सम्पन्न कविता आज कहीं रुग्ण होकर कमजोर हो चली है जैसे उसका दम घुट रहा हो। आज का सांस्कृतिक परिवेश अनेक किसिम के दूषणों से ग्रस्त है। विद्रुप और विभेद की धूल गर्द से सनी रचनाशीलता राह ढूंढ रही है और पंक में फँसी कविता पनाह चाहती है क्योंकि, परिस्थितियों की झपट ने उसे बेचैन कर दिया है।

रचनात्मकता जब विचारों का परिधान धारण करती है तो उसके सामने उसका 'पक्ष' खड़ा हो जाता है जिसका अतिक्रमण वह नहीं कर सकती, अपना 'पक्ष' या अपना 'जस्टीफिकेशन' छुपाना मौत की सजा झेलने जैसा हो सकता है जिसमें जनतांत्रिकता का कहीं लेश भी नहीं होता जिससे थोड़ी ताजी हवा मिल सके; अंधेरी गुफा की यात्रा में रत रचनाशीलता असमंजस या 'कनफ्यूजन' को जन्म देती है।

आज का सांस्कृतिक प्रदूषण से भरा परिवेश विद्रोह की जगह विभेद की सृष्टि में रत है। वस्तुतः, विद्रोह की भूमिका जहाँ अस्वीकार से शुरु होकर बदलाव तक खिंचती है और अन्ततः इंकलाब लाकर दम लेती है वहीं विभेद विखण्डन की तरफ ले जाकर लोक मानस में विष वपन करता है। विभेद का आधार जड़ता एवं कूपमण्डुकता है अतः नकारात्मक है। 21वीं सदी का लोकमानस कहीं न कहीं संकीर्णता एवं कट्टरता की शिकार होकर विभेद की भावना से ग्रस्त है। विभेद ने इन्सानियत की इमारत में गहरी दरारें डाल दीं है। सोच और समझ के साथ-साथ अपना-अपना पक्ष तैयार होता है और उसे व्यक्त करने की आजादी लोकतंत्र की आधारशिला बनाती है। परन्तु आज संसार के पटल पर से जन के तंत्र का अपहरण हो रहा है। मूलतः मानव मूल्य में टूट-फूट और विखराव जारी है।

कविता एक ऐसी साहित्यिक विधा है जो भावोच्छलन की कतार में सबसे आगे खड़ी मिलती है और किसी भी सोच या समझ के पक्ष में पूरी ईमानदारी से अपने को झोंकती है लेकिन, आज के समय का दृश्य पटल पर फिर वही कुहेलिका राह रोके खड़ी हो जाती है - यक्ष प्रश्न अपने को दुहराता है कि क्या कोई अपनी सोच और समझ की सचाई को या यों कहें कि अपने पक्ष को पूरी शिद्दत के साथ व्यक्त कर सकता है? .... यहीं-कहीं.... रोक लिये जाते हैं रचनाकार... कलाकार... विवेकपूर्ण अस्वीकार के सामने खड़ा मिलता है, 'बेरिकेड' और मुकम्मल नहीं हो पाती वो बातें जिन पर चढ़कर रचनाशीलता परवान लेती है। असमंजस में भटकती रह जाती है कविता और वह वह नहीं रहती कोई दूसरी ही जाती है।

अस्तु, मुक्तांचल के अगले अंकों में कविता पर संवाद जारी रहेगा और उम्मीद है इस पहल पर कवि, कृति और कविता पर ढेर सारी बातें खुलकर सामने आयेंगी।

संपादक